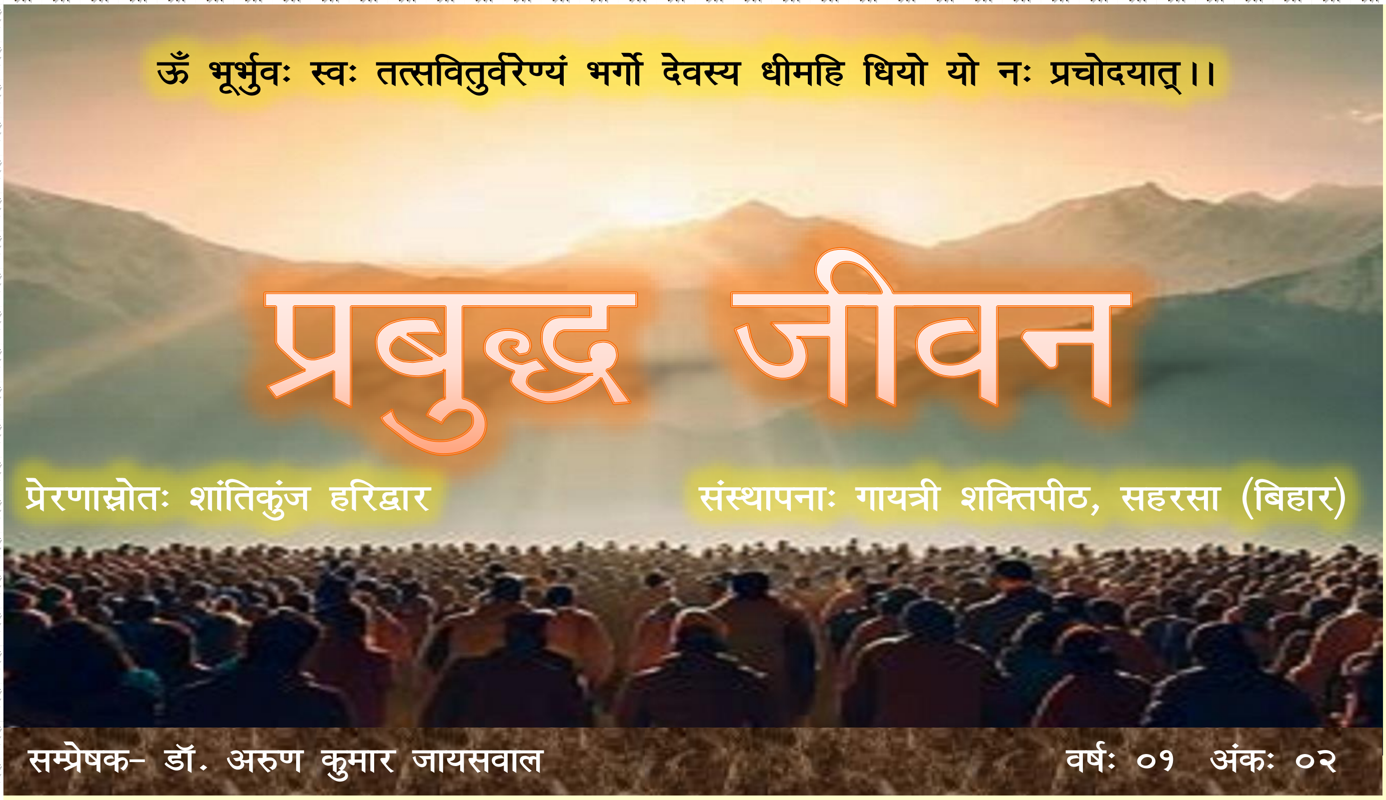

ॐ

ॐ अमृत अक्षर है। इसके इस एकाक्षर स्वरूप का अनुभव गायत्री मंत्र की ब्रह्मविद्या साधना का समाधि परिणाम है। परम समाधि की इस अवस्था में पर वैराग्य, विवेक ख्याति की परमावस्था परम प्रकाश में लीन हो जाते हैं। धर्ममेघ समाधि का अनुभव, कैवल्य की स्वरूप प्रतिष्ठा इसी अवस्था में अनुभव होती है। इस अनुभव में गायत्री महामंत्र में स्थित तीनों व्यहृतियाँ, गायत्री मंत्र के सभी चौबीस मंत्राक्षर स्वतः समा जाते है। व्यहृतियों के तीनों लोक, मंत्राक्षरों में समाए प्रकृति एवं उसके तेईस तत्व इस अनुभव में विलीन हो जाते है।

आत्मा का परमात्मा में, शून्य का महाशून्य में, पुरुष का पुरुषोत्तम में महामिलन इसी समाधि सत्य में होता है। चित्त-चिन्तन-चेतना सभी के प्रकाश परम प्रकाश की परमावस्था में समा जाते है। इस परम समाधि में जीवात्मा-परमात्मा का द्वैत अथवा जीव, प्रकृति व ईश्वर का भेद जैसा कुछ नहीं रहता। यहाँ सब कुछ अद्वय व अद्वैत ही हैं। यहाँ आत्मा व परमात्मा के महामिलन की महासमाधि है।

इस समाधि से जागरण होने पर ॐ की तीन मात्राऐं 'अ', 'उ' और 'म' के रूप में प्रकट होकर सृष्टि सृजन, स्थिति व लय का कार्य ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं इनकी त्रिशक्तियों के रूप में करती हैं। इसके अर्द्धचन्द्राकार स्वरूप में परमात्मा स्वयं ईश्वर रूप में स्थित होता है। इसके ऊपर के बिन्दु के रूप में ब्रह्म स्वरूप में वह सदा मन-वाणी से परे बना रहता है। ॐकार का एक अक्षर स्वरूप अ उ म् के रूप में इसका त्रिमात्रा रूप व अर्द्धचन्द्राकार एवं इसके बिन्दु के रूप में इसका अर्धमात्रा रूप अपने ध्वनि, नाद, अर्थ के रूप में जीवन व जगत का प्रकटन करता है।

हृदय से हृदय तक

जब मेरे हृदय के स्वर आपके हृदय में गूंजते हैं तो इनकी प्रतिगूंज फिर से मेरे पास लौटती है। यह भावों का भावों से मिलन है। ध्वनि को प्रसारित करने वाली हवाऐं इस भावगुंजन को पता नहीं कैसे? शायद किसी अनजान विधि से हम तक पहुँचा ही देती हैं। आपके अपनत्व से पुलकित हुआ मन, फिर से नया शब्द संसार संवारने, संजोने मे संलग्न हो जाता है। आज भी कुछ ऐसा ही है। आपके आन्तरिक स्पर्श ने मुझे प्रेरित किया है और मैं कलम को थामकर अक्षरों के आसमान में विचारों और भावों के चांद-सितारे सजाने के लिए बैठ गया।

आँखें उठाकर ऊपर की ओर देखा तो नील गगन को मेघाछन्न पाया। सावन की वृष्टि हो रही है। जल जीवन के लिए जरूरी है, लेकिन इसकी अधिकता के अतिरेक में इसमें जीवन का लय-विलय भी होने लगता है। इसीलिए अधिकता का अतिरेक कभी अच्छा नहीं होता। हालांकि सावन की मेघमालाऐं कभी-कभी अलौकिक छवि की छटा भी बिखेरती हैं। ऐसा लगता है कि सावन के महीने में स्वयं महेश्वर महादेव ने विश्व रूप धारण कर लिया है। धरती पर उनके चरण हैं, आकाश में उनका मस्तक। आसमान की घनमालाऐं जैसे उनकी घनी जटाऐं हैं, जिसमें से जल वर्षा की गंगाधारा समूची धरती को प्लावित व पोषित करने के लिए बरस रही है। आकाश में यदा-कदा कौंधती विद्युत, उनके हास्य की छटा जब-तब बिखेर देती है। मेघों की गर्जना सुनकर बीच-बीच में ऐसा लगता है, जैसे उनके गले में शोभित नागराज वासुकि ने हुंकार भरी है।

महादेव रुद्र हैं, और शिव भी। हमारे दुष्कर्म बढ़ जाऐं तो वे इनके विनाश के लिए रुद्र बनकर घोर तांडव करते हैं। यदि हम सबके सुकर्म-सत्कर्म बढ़े तो वे सदाशिव के रूप में लास्य नृत्य करते हुए नवसृजन करते हैं। वेद में उन्हें भव, शर्व, नीलकण्ठ, पशुपति, गिरीश, नीलग्रीव, शितिकण्ठ, शंकर कहते हैं। सावन की वृष्टि में अनायास शिवभक्ति की सृष्टि समा गयी है। महादेव- महेश्वर हैं, महाकाल हैं। वे युगदेवता, युगाराध्य हैं। वे युग प्रत्यावर्तन के प्रवर्तक हैं। सावन का महीना अपने सत्कर्मों, सुकर्मों से उनकी आराधना के लिए है। यह सघन साधना के लिए मनभावन सावन है। शिवाभिषेक के शिवार्चन में इसकी महिमा प्रकट होती है। जलाभिषेक से महारुद्र का रौद्र रूप तत्क्षण सदाशिव के स्वरूप में कल्याणकारी और वरदाता बन जाता है।

जब विषपायी महेश्वर जीवन और जगत के समस्त विष का पान व शमन के लिए तत्पर हैं, तो हम सबको भी उनकी अर्चना, आराधना, पूजा, प्रार्थना में देर नहीं करनी चाहिए। हमने यदि इस सच को समझ लिया है तो प्रतिक्षा किस बात की है, देर किस लिए, चल पड़ें महाकाल-महेश्वर महादेव का जलाभिषेक करने के लिए। हर-हर बम-बम के महोच्चार के साथ प्रकृति तो उनका जलाभिषेक कर ही रही है, हम सब भी उसमें सहभागी हो जायें। 'सावन की वृष्टि में भक्ति की सृष्टि' के सूत्र को इसी क्षण अपना जीवन सत्य बना लें।

सभी को सम्प्रेषक का स्नेह

GRATITUDE

Out of one of the many reasons as to why the homo sapiens still walk the earth despite so many massacres, genocides, abrasive destruction of ecology and nature and complete brutality and disregard for almost everything that goes beyond the concept of 'Me, Myself and Mine' is because somewhere, somehow there is still a sizeable lot that offer gratitude for everything that they have been blessed with.

Grievances over the smallest things and total ignorance for all that is in possession is the cause of despair. Gratitude to fellow human beings who have helped us in times of hardships, gratitude to God who helped us to sail through the toughest phases of our life. Maybe for a moment or two, maybe for a phase, we remember the good acts but soon we are at what we do best- complain and be unhappy for the material things that we lack. We have huge expectations from people around us without even thinking once about the reality that in exchange, how many times have we actually stood with those very people when they were going through a bad patch in their lives. When we begin to think in those lines, we begin to contemplate and then realize how selfish we have been.

Our ancestors were aware of this and offered gratefulness to the sun, rivers, trees, monsoons and the people around them that went beyond their families. Civilizations prospered because the moral fabric of the people was based on gratitude and the memory of that gratitude. To be grateful was an intrinsic part of human nature and one did not mix it with worldly measures of commerce.

There are huge lessons learnt when we are grateful. We learn to give and forgive and understand that we are here for a purpose. Being grateful makes us less aggressive. We become more empathetic and kinder. Humility also gets embedded in our consciousness.

To be grateful is to live life with grace. To be thankful to the smallest of things is a stepping-stone to appreciating the various gifts of life. To be alive, to be breathing and therefore to be hopeful is one of the greatest things to be obligated to. To be appreciative towards the smallest of gestures offered by strangers is a way of appreciating nature and nature’s laws.

Life has many countenances but if we remain grateful throughout the journey - it becomes bearable, easy and full of kindness. Gratitude needs to be cultivated and nourished each day with practice and mindfulness. It is one of the greatest human virtues.

- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

आत्मतीर्थ महातीर्थ

तीर्थ नाम ही ऐसा है जो स्वच्छता और पावनता का प्रतीक है। हमारा भारतवर्ष तो तीर्थों का ही देश है। उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम हर तरफ महान से महान तीर्थ हैं जो हमारे जीवन को, हमारे मन को अपने सान्निध्य से पावन कर देते हैं। चाहे वे द्वादश ज्योतिर्लिंग हों, चाहे 52 शक्तिपीठ, चाहे 2400 गायत्री शक्तिपीठ, चाहे राम, कृष्ण आदि देवी-देवताओं से संबंधित तीर्थ। ये तीर्थ हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। हम वहाँ जाकर प्रसन्न होते हैं परन्तु तबतक जबतक हम वहाँ रहते हैं पर वहाँ से वापस आने पर धीरे-धीरे उनकी स्मृति धूमिल होने लगती है और हमारी प्रसन्नता कमतर होने लगती है। इसलिए हमारे औपनिषदिक ऋषियों ने इन तीर्थों से भी बड़ा तीर्थ आत्मतीर्थ को मानते हुए यह कहा है –

बहिस्तीर्थात् परं तीर्थं मनस्तीर्थं महामुने
आत्मतीर्थं महातीर्थान्यतीर्थं निरर्थकम्।।

अर्थात् बाहर के तीर्थ से बड़ा तीर्थ मन का तीर्थ है और मन के तीर्थ से बड़ा तीर्थ आत्मा का तीर्थ है। आत्मा के तीर्थ के आगे अन्य तीर्थों की चमक फीकी है। कहने का तात्पर्य है कि हमारा शरीर स्वयं एक देवालय है पर इसे हम प्रायः नहीं जानते हैं । जबकि इस देवालय में आत्मदेव का वास है। तीर्थों में जाकर पुण्य फल तो प्राप्त होता है परन्तु इस तीर्थ में अहर्निश रमण करने पर मनुष्यमात्र को वह आनन्द प्राप्त होता है जो दुर्लभ है। बाहर के तीर्थ स्थूल हैं और आत्मा का तीर्थ सूक्ष्म हैं। हम जितना-जितना स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाते जाएँगे उतनी-उतनी शांति और आनन्द प्राप्त करते जाएँगे ।

हर मनुष्य शांति का प्यासा है, आनन्द का भूखा है। संसार के सारे तीर्थ मिलकर भी मन की दुर्लभ शांति तबतक नहीं दे सकते जबतक हमारा मन दुनिया के झँझटों से अशांत है। मन की हर अशांति का निदान आत्मतीर्थ है। मनुष्य एक बार आत्मतीर्थ में रमण करना सीख ले तो बाहर के तीर्थों में मिली शांति और आनंद भी और भी द्विगुणित हो जाते हैं। आत्मतीर्थ जड़ का पोषण है जिससे मनरूपी तना सद्गुणों से पुष्ट होता है और जब मनरूपी तना पुष्ट होता है तो उसमें शुभ कर्मरूपी फल लगते हैं। तब वृक्ष के सूखे छाल की तरह अशुभ कर्मफल झड़ने लगते हैं। पवित्र मन में तीर्थों में सुशोभित भगवान स्वयमेव प्रकट होने लगते हैं और मानव मन के समस्त परिकर को चन्दन-चन्दन कर देते हैं। इसलिए, हमें आजन्म अपने मन को पवित्र बनाना है। क्योंकि हमारे पवित्र मन में ही आत्मदेव के सूक्ष्म परन्तु नयनाभिराम दर्शन होगे, इसमें कोई भी सन्देह नहीं है। कहते हैं –

आत्मदेव की करें साधना, आत्मदेव की करें आराधना
आत्मदेव की करके उपासना, निज जीवन को महान बनाएँ ।।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- **जीवन के अंत तक सभी विद्यार्थी ही रहते हैं। जीवनविद्या जीवन के अंत तक हम कहां सीख पाते हैं?**

- **दिनभर हम साँस लेकर, ऑक्सीजन लेकर, कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं, वातावरण को गंदा करते हैं। हम सभी के ऊपर प्रकृति का कर्ज है, यज्ञ करने से कार्बन डाइऑक्साइड खत्म होता है, कार्बन मोनोऑक्साइड खत्म होता है, क्लोरोफ्लोरोकार्बन खत्म होता है। यज्ञ करके हम प्राण ऊर्जा, प्राण वायु यानी ऑक्सीजन को बढ़ाते हैं, वातावरण को शुद्ध करते हैं, तो यज्ञ करके हम प्रकृति का कर्ज चुकाते हैं।**

- **श्रावण मास सुनने का मास है, गुरु ने कहा शिष्य ने सुना। श्रवण, मनन, निदिध्यासन। सुनिए, उस पर चिंतन -मनन कीजिए और उसे अपने जीवन में उतारिए।**

- **चार महीने सृष्टि का संचालन भगवान शिव करते हैं, आठ महीने सृष्टि का संचालन भगवान विष्णु करते हैं। चार महीना साधना का काल बताया गया है।**

- **जहां शिव मंदिरों में शिवलिंग पर जल टपकता रहता है वहां सूखा नहीं पड़ता, अकाल, दुर्भिक्ष नहीं होती, अतिवृष्टि - अनावृष्टि नहीं होती, संतुलन बना रहता है। हम पत्थर को सिंचित नहीं कर रहे हैं, पूरे कायनात को जल से सिंचित करते हैं। अभिषेक का मतलब ये होता है।**

- **देवशयनी एकादशी से देवोत्थान एकादशी का ये चातुर्मास व्यक्ति के अंतर्मुखी होकर साधना करने का काल है व्यक्ति अपने मन की साधना करता है, मन को सही दिशा प्रदान करता है, मन की कामना को भावना में परिवर्तित करता है।**

- **मंगल उत्सव तभी सफल होगा जब आपके पास पुण्य प्रचुर मात्रा में होगा। प्रत्येक वर्ष चतुर्मास हमें पुण्य और तप अर्पित करने का अवसर देता है।**

- **मलमास में, संक्रांति काल में, चतुर्मास में कोई मंगल कार्य नहीं करते पर अन्य सभी कार्य कर सकते हैं। हां! इस समय की गई साधना - आराधना, उपवास, तपश्चर्या यह सब अत्यंत फलदाई माने जाते हैं। ये सारे मास कर्म काटने के होते हैं, यह समय पुण्य के अर्जन का समय होता है।**

- **आने वाली पीढ़ी हमें इसलिए माफ नहीं करेगी कि बुरे लोगों ने बुरा काम किया बल्कि आने वाली पीढ़ी हमें इसलिए माफ नहीं करेगी कि अच्छे लोगों ने अच्छा काम नहीं किया । हम क्या छोड़कर जा रहे हैं? हवा में जहर? पानी में जहर? सब्जियों में जहर? फलों में जहर? हम मकान दुकान, फैक्ट्री, बैंक -बैलेंस छोड़कर जा रहे हैं। लेकिन सच यह है कि हम एक जहरीली दुनिया छोड़कर जा रहे हैं । जिसमें आने वाली पीढ़ी सांस तक नहीं ले पाएगी। इस बात पर सोचिए, विचारिए तब अपने जीवन की रीति -नीति का निर्धारण करिए।**

- **इस संसार में दो ही कवच है -पुण्य और तप। पुण्य सघन है और तप तीव्र है तो आप सर्व विधि से सुरक्षित रहेंगे।**

- **प्राण ऊर्जा का शोधन करती है गायत्री मंत्र।**

- शरीर बल है तो काम करते हैं, मनोबल है तो विचार करते हैं और प्राण बल है तो भावनाओं को संभाल पाते हैं, रिश्ते निभा पाते हैं। प्राण बल की शुद्धता भावनात्मक स्थिरता प्रदान करती हैं । इससे व्यक्तित्व का भी विकास होता है और रिश्ते निभते चले जाते हैं।
- ज्ञान संपदा नहीं है, ज्ञान स्वीकृति है। कोई इसको पेटेंट नहीं करा सकता। अगर कोई कहता है आज कि यह हमारी खोज है, तो यह गलत है, क्योंकि जब चित्त स्थिर, शांत और एकाग्र होता है तो अंतरिक्ष में जो पहले से ज्ञान विद्यमान है, हम उसको प्राप्त करते हैं। इसलिए ज्ञान संपदा नहीं है, संपत्ति नहीं है। ज्ञान जो अंतरिक्ष में है उसको हम स्वीकारते हैं, इसलिए ज्ञान स्वीकृति है।
- अगर हम सुखी हैं तो पुण्य खर्च हो रहा होता है, अगर दुखी हैं तो पाप खर्च हो रहा होता है।
- दुख के समय त्याग और सुख के समय सेवा का कार्य करेंगे तो दुख नहीं आएगा, क्योंकि पुण्य बढ़ता रहेगा।
- दुख ना आए जीवन में, हमारा सुख निरंतर बना रहे, इसलिए हमारे पूर्वजों ने, ऋषियों ने बताया कि मनुष्य दीर्घकाल तक सुखी कैसे रह सकता है? तप करके, पुण्य अर्जन करके।
- प्रकृति का संविधान है कर्म फल विधान। देव हो, दानव हो, मानव हो प्रकृति उनका हिसाब -किताब जरूर कर देती है ।प्रकृति में है संतुलन का सिद्धांत।
- एक नयन, एक आंख संसार को देखने के लिए माता के गर्भ से मिलती है। एक दृष्टि, एक आंख मिलती है संसार को समझने के लिए गुरु के ज्ञान से। यह है उपनयन संस्कार।
- गुरु भली-भांति समझाता है, बताता है कि मनुष्य को किसी भी परिस्थिति में धर्म का पालन करना चाहिए। धर्म का पालन हमें असंख्य विपदाओं से बचाता है, हमें मार्ग देता चला जाता है।
- गुरु का कार्य है सन्मार्ग देना, सद्बुद्धि देना ।गुरु तीनों जगत को भलीभांति समझाते हैं बाह्य जगत, सूक्ष्म जगत, अंतर जगत यानी स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर।
- मनुष्य जीवन के जितने तल हैं, मनुष्य के चेतना के जितने तल हैं, चाहे देह का तल हो, प्राण का तल हो, साँस का तल हो, सांसों के बीच जो अंतराल है उसका तल हो, जितने तल हैं, जितने डायमेंशन हैं, जितने आयाम हैं, उस आयामों में जितने जोड़ हैं, सब में ध्यान की विधि और ध्यान का फल समझाते हैं गुरु। फिर शिष्य निहाल हो जाता है।
- बाह्य जगत के प्रकाशित होने का मतलब है मानव जीवन का प्राण संपन्न होना।
- अनंत- अनंत प्रेम भगवान से, अपने गुरु से ।अगर ऐसा है तो एक-एक वाक्य जो भगवान ने कहा, जो गुरु ने कहा आपको जागृत कर देगा।
- इंसान की मांग धन -पद- यश -पैसा नहीं है, एक अवधि के बाद सब बोर करता है। इंसान की पहली मांग, अंतिम मांग और सर्वाधिक मांग, प्रेम है। लेकिन प्रेम मांगने से मर जाता है, बटोरने से बिखर जाता है और प्रेम बांटने से बढ़ता है खुशी बटोरने से बिखरती है, बांटने से बढ़ती है।

जिज्ञासा

प्रश्नः - ब्रह्मा, विष्णु, महेश परमात्मा है क्या? महात्मा बुद्ध इनको क्यों नहीं मानते थे?

उत्तरः - ब्रह्मा, विष्णु, महेश ईश्वर नहीं देवता हैं। महात्मा बुद्ध ईश्वर को आत्मा रूप में मानते थे। भगवान परम सत्य है और ब्रह्मा, विष्णु, महेश परम सत्य नहीं है उन्हीं के एक स्वरुप हैं। परम सत्य तो परब्रह्म परमात्मा है।

प्रश्नः - शनि मनाने का क्या मतलब है?

उत्तरः - शनि मनाने का मतलब है कर्म को पहचानना। शनि कर्मफल दाता हैं, न्यायाधीश हैं।शनि मनाने का मतलब है हर कर्म को पहचान कर, उसका परिमार्जन कर सत्कर्म की ओर प्रवृत्त होना। जप - तप, पूजा - पाठ, पीपल की परिक्रमा के अलावा, अपने से छोटे वर्गों के लोगों का सम्मान करना और उनकी सहायता करना, शनि की अनुकूलता प्राप्त करना है। पीपल के पेड़ की पूजा करना यानी पिप्पलाद ऋषि के द्वारा शनि को भी मर्यादित किया गया था इसलिए पीपल की परिक्रमा करना शनि को मर्यादित करने जैसा है।

प्रश्नः - अपने आत्मस्वरूप को कैसे प्राप्त करें?

उत्तरः - जब आपकी धारणा स्थिर हो जाती है, आप प्रकृति के सम्मोहन पाश से मुक्त हो जाते हैं, फिर आपकी अनासक्ति, तादात्म्य विसर्जन आपको अपना स्वरूप प्राप्त कराता है।

प्रश्नः - जीवन का अंत और आरंभ क्या है?

अंत और आरंभ जीवन का है और आत्मा जीवन नहीं है। हां आत्मा जब स्वयं को प्रकट करती है तो जीवन के रूप में करती है। प्रकृति के साथ मोह पाश में बंध कर करती है यानी आत्मा का प्रकटिकरण है जीवन। भावना को भक्ति में बदलिए, प्राण को शुद्ध करिए, तो जीवन के अंत और आरंभ से हमें मुक्ति मिल जाएगी और हम अपने आत्मस्वरूप से साक्षात्कार कर पाएंगे।

प्रश्नः - देवता और परमात्मा में क्या अंतर है?

उत्तरः - जो अग्नि की ज्वाला में और अग्नि की चिंगारी में अंतर है। परमात्मा जीवन का आधार है, देवता आधार नहीं है। परमात्मा वह है जिससे जीवन प्रकट होता है।

जुलाई माह की विशेष गतिविधियाँ

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में महिला मंडल, युवा मंडल, युवती मंडल, कार्यकारिणी समिति के सदस्य द्वारा सफाई अभियान

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ के दौरान वृक्षारोपण कार्यक्रम

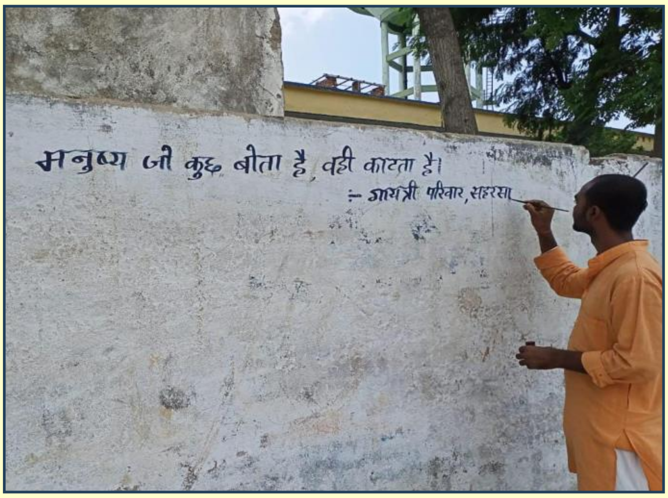

गृहे–गृहे गायत्री यज्ञ में दीवार लेखन करते हुए युवा मंडल

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ करते हुए

श्रावण मास में शिवाभिषेक करते श्रद्धालुगण

साप्ताहिक रविवासरीय गान, ज्ञान एवं ध्यान की कक्षा के क्रम में डॉ0 अरुण कुमार जायसवाल एवं भाग लेने वाले युवा एवं युवतियां

गायत्री शक्तिपीठ खगड़िया में महाकाल की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के परिजनों की भागीदारी

अश्वमेध रजत जयंती महोत्सव के लिए गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में उपजोन स्तर के बैठक में सम्मिलित पटना के वरिष्ठ परिजन एवं मधेपुरा, सुपौल, खगड़िया, बेगूसराय, सहरसा के परिजन

संजीवनी साधना सत्र (शांतिकुंज, हरिद्वार) जाने वाले साधकों को, वहां के अनुशासन के जानकारी देते हुए डॉ० अरुण कुमार जायसवाल जी

16/07/2023 व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए सुपौल जिला से आयी ACGM श्वेता ग्रेवाल

ऋतम्भरा बालसंस्कार में प्रशिक्षण देते हुए युवा मंडल के भाई

गायत्री शक्तिपीठ में प्रतिदिन की तरह बाल संस्कारशाला का क्रम

अर्धवार्षिक (DCA) एवं त्रैमासिक (CCA) कम्प्यूटर कोर्स के अन्तर्गत साप्ताहिक परीक्षा के क्रम में छात्र

उपजोन सहरसा के द्वारा दिनांक 23 जुलाई को गायत्री शक्तिपीठ मधेपुरा ट्रस्ट पुनर्गठन के बैठक का एक दृश्य

अस्पताल परिसर में मरीज के परिजनों एवं जरूरतमंदों के लिए भोजन के तैयारी करते कार्यकर्ता

सदर अस्पताल परिसर में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के द्वारा प्रतिदिन चल रहे भोजन प्रसाद लेते हुए मरीजों के परिजन

गुरु पूर्णिमा पर्व के अवसर पर बाल संस्कारशाला के बच्चों ने गुरु दीक्षा लेकर गुरु का वरण किया

गुरु पूर्णिमा पर्व के अवसर पर कर्मकाण्ड कराती हुई देव कन्याएं

गुरु पूर्णिमा पर्व के अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में पूजन में भाग लेने वाले गायत्री परिजन

संध्याकालीन प्रगेश्वर महादेव मंदिर में आरती एवं दीपमाला की सजावट के साथ महिला मंडल

प्राकृतिक चिकित्सा सत्र में मिट्टी स्नान

प्राकृतिक चिकित्सा सत्र में मिट्टी पट्टी का प्रयोग एवं इसके फायदे

मिट्टी चिकित्सा प्राकृतिक चिकित्सा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है। यह शरीर को शीतलता प्रदान करती है तथा शरीर के दूषित पदार्थों को घोलकर एवं अवशोषित कर शरीर से बाहर निकाल देती है। विभिन्न रोगों जैसे-कब्ज, तनाव, सिरदर्द, उच्च रक्तचाप तथा चर्म रोगों आदि के उपचार में सफलतापूर्वक इसका प्रयोग किया जाता है। सिरदर्द तथा उच्च रक्तचाप आदि में पेट के साथ-साथ माथे पर भी मिट्टी की पट्टी रखने से उसका लाभ द्विगुणित हो जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की आत्मकथा में कब्ज को दूर करने के लिए प्रायः मिट्टी की पट्टी लिए जाने का संदर्भ मिलता है।

'एडोल्फ जस्ट' ने अपनी पुस्तक 'रिटर्न टु नेचर' में मिट्टी के गुणों का वर्णन किया है। यही पुस्तक पढ़कर महात्मा गांधी भी प्राकृतिक चिकित्सा की ओर उन्मुख हुए थे।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मिट्टी चिकित्सा की उपयोगिता बढ़ती जा रही है। नित्य बढ़ रहे मानसिक तनाव, शारीरिक व्याधियों तथा तनाव जन्य विकारों के निवारण में मिट्टी चिकित्सा रामबाण की तरह कार्य करती है। सिर दर्द, उच्च रक्तचाप, उदर रोग, हृदय रोग, अनिद्रा तथा अन्य अनेक रोग ऐसे हैं जिनका उपचार मिट्टी चिकित्सा से सफलतापूर्वक किया जा सकता है। भारत के अधिकांश प्राकृतिक चिकित्सालयों में मिट्टी चिकित्सा की व्यवस्था उपलब्ध है, जहाँ पर रोगी एवं स्वस्थ व्यक्ति सभी जाकर मिट्टी चिकित्सा का लाभ उठाते हैं।

मिट्टी का प्रयोग प्रत्येक मौसम में किया जा सकता है। यह अत्यन्त सरल, प्रभावी तथा हानिरहित चिकित्सा है। प्रत्येक व्यक्ति इसके सिद्धान्तों को समझ कर स्वास्थ्य लाभ हेतु इसका प्रयोग कर सकता है।

माह जुलाई में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -

- श्री प्रणव कुमार (सुपौल)
- श्रीमती श्वेता ग्रेवाल (AGCM सुपौल)
- श्रीमती रत्न श्री (शिक्षिका दिल्ली)
- प्रो0 (डॉ0) चंद्र प्रकाश सिंह (Head of History Department B.N.M.U मधेपुरा)
- श्रीमती मीरा देवी (शिक्षिका मधेपुरा)
- श्री अभिजीत (पूना)
- श्रीमती शाची (पूना)

गायत्री शक्तिपीठ पटना जोन से आये हुए अतिथीगण

- श्री अरविंद जी
- श्री मनीष कुमार
- श्री निशांत रंजन
- श्री प्रिंस रंजन
- डॉ0 नरेंद्र जी
- श्री रामनाथ जी
- श्री लाल बाबू जी
- श्री बिंदेश्वरी जी
- श्री शैलेंद्र जी

आगामी कार्यक्रम

- **शांतिकुंज हरिद्वार में नौ दिवसीय साधना सत्र (1 अगस्त से 9 अगस्त) में गायत्री परिवार सहरसा के साधकों की भागीदारी**
- **श्रावण मास का अभिषेक अगस्त में प्रतिदिन, प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर, गायत्री शक्तिपीठ सहरसा**
- **विशेष प्रसाद 13 अगस्त 2023, गायत्री शक्तिपीठ सहरसा**
- **स्वतंत्रता दिवस समारोह, प्रसाद वितरण 15 अगस्त 2023, गायत्री शक्तिपीठ सहरसा**
- **नागपंचमी/सातवीं सोमवारी, 21 अगस्त, 2023**
- **रक्षाबंधन/श्रावणी पूर्णिमा, 30 अगस्त, 2023**

भाव पथ

एक सनातन रिश्ता, हम, खोजने चले हैं
हे परमात्मा आपको, हम, पुकारने चले हैं ।

जहाँ कहीं भी हैं, आप, दर्शन मिले आपका
यही तो हम आपको, कहने चले हैं ।।
कहाँ छुपे हैं आप, किस प्रकोष्ठ में हैं
हर तरफ आपको, हम, ढूँढने चले हैं । एक सनातन रिश्ता --------

आखिर आप हमें, मिलेंगे कहाँ पर
यही तो हम, सतत, सोचने चले हैं ।
आइए पूर्ण ब्रह्म, जीवन में हमारे
जीवन-रहस्य हम, समझने चले हैं ।। एक सनातन रिश्ता --------

जीवन हमारा, आप बिन अधूरा
हम, स्वयं को पूर्ण अब, करने चले हैं ।
आत्मा की पहुँच, हो जाए आपतक
हम शाश्वत प्रियतम से, मिलने चले हैं ।। एक सनातन रिश्ता --------

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है– मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे– यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	**गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)**
संपर्क सूत्र	:	**06478-228787, 9470454241**
Email	:	**gspsaharsa@gmail.com**
Website	:	**https://gsps.co.in/**
Social Connect	:	**https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA**
		https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39
		https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en
		https://www.kooapp.com/profile/gayatri7AJ0S6
		https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en
		https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/